E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

उत्तररामचरित

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

संस्कृत नाट्यसाहित्य में भवभूतिरचित उत्तररामचरित नाटक का विशिष्ट स्थान है। कवि का व्यक्तित्व उसकी कृति में प्रतिबिम्बित रहता है। उत्तररामचरित महाकवि भवभूति की प्रौढतम कृति है। इस नाटक की सर्वोत्कृष्टता के कारण ही कहा जाता है-'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते'। यह करुण रस का सर्वश्रेष्ठ नाटक है।

इस नाटक के 7 अंकों में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है। इसमें सीता परित्याग, राम-विलाप, लव-कुश-प्राप्ति भौर राम के द्वारा निर्दोष सीता के स्वीकार किए जाने का वर्णन है। अंकानुसार कतिपय महत्त्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख आगे किया जा रहा है-(अंक १) राम चित्रवीथी में सीता को विवाह से लेकर अग्निशुद्धि तक के चित्र दिखाते हैं। लोकापवाद के कारण वे सीता का परित्याग करते हैं। (अंक २) वन में लव और कुश का जन्म, राम का अश्वमेध यज्ञ, लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु का अश्वमेधीय अश्व का रक्षक होना, शम्बूक-बध। (अंक ३) राम का पंचवटी में पुनरागमन; पूर्व घटनाओं को स्मरण कर मूर्च्छित होना और अदृश्य सीता द्वारा होश में लाया जाना; अश्वमेध यज्ञ में सीता की प्रतिमा रखना। (अंक ४) वाल्मीकि के आश्रम में वसिष्ठ, अरुन्धती, जनक, कौसल्या आदि का आगमन; बालक लव का दर्शन; अश्वमेधीय अश्व को पकड़ने के लिए लव का प्रस्थान। (अंक ५) लव द्वारा जृम्भक अस्त्र का प्रयोग; चन्द्रकेतु और लव का युद्धार्थ तैयार होना। (अंक ६) लव और चन्द्रकेतु का दिव्य अस्त्रों से घोर युद्ध; राम का आगमन; युद्ध बन्द होना; कुश का आगमन; राम का अनुमान कि लव-कुश सीता के पुत्र हैं। (अंक ७) वाल्मीकि के आश्रम में 'गर्भनाटक' का अभिनय; सीता को निर्दोष सिद्ध करना; लव-कुश और सीता से राम का मिलन।

उत्तररामचरित भवभूति का अन्तिम और सर्वोत्कृष्ट नाटक है। इसकी कथा वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा पर आश्रित है। यह करुण-रस-प्रधान नाटक है। इसमें कवि की योग्यता, विदग्धता, कवित्वशक्ति, वर्णनशक्ति, सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विवेचन और रसपरिपाक चरम उत्कर्ष पर हैं। इसमें करुण रस का इतना प्रौढ वर्णन है कि इस नाटक के कारण ही भवभूति की कीर्ति दिग्दिगन्त में व्याप्त है।

मूलकथा में परिवर्तन

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड (सर्ग ४२ से १७) में राम के राज्याभिषेक से लेकर सीता के पृथ्वी में अन्तर्धान होने तक का वर्णन है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार यह कथा दुःखान्त है, क्योंकि पृथ्वी के फटने से सीता उसमें लुप्त हो जाती हैं। पद्मपुराण (पातालखंड, अध्याय १ से ६८) में वर्णित रामकथा से उत्तररामचरित की कथा में अधिक साम्य है। इसमें अन्त में राम-सीता का मिलन वर्णित है, अतः यह कथा सुखान्त हो जाती है।

इससे ज्ञात होता है कि भवभूति ने यद्यपि रामायण की कथा को आधार बनाया है, तथापि कथावस्तु के लिए पद्मपुराण को ही विशेष रूप से आधार माना है। भवभूति ने उसमें आवश्यकतानुसार अनेक परिवर्तन किए हैं। विभिन्न प्रसंगों को नाटकोपयोगी बनाने के लिए ऐसा आवश्यक था। इस नाटक में भवभूति का उद्देश्य है- करुण रस का प्रवाह लाना और सभी अन्य रसों को करुणमूलक सिद्ध करना। अतः उन्होंने प्रत्येक घटना के मूल में करुण की भावना को स्थान दिया है। इसके लिए घटनाओं में यथास्थान परिवर्तन किया है; घटनाओं का क्रम बदला है; नवीन दृश्यों को जोड़ा है; नवीन पात्रों की कल्पना की है और नाटक को सुखान्त बनाया है। इन परिवर्तनों के कारण भवभूति की मौलिकता और नाटकीय प्रतिभा का परिचय मिलता है। विभिन्न प्रसंगों को इस प्रकार जोड़ा गया है कि उनमें नाटकीय गति और स्वाभाविकता प्रतीत होती है। विशेष उल्लेखनीय परिवर्तन ये हैं-

अंक १- चित्रवीथी का दृश्य भवभूति की मौलिक कल्पना है। दुर्मुख गुप्तचर की सूचना पर लोकापवाद के कारण सीता का परित्याग। मूलकथा में भद्र सभासद् लोकापवाद की सूचना देता है।

अंक २- सीता का गंगा के प्रवाह में लव-कुश को जन्म देना; दूध छोड़ने के बाद बच्चों को वाल्मीकि

के संरक्षण में रखना और स्वयं पाताल में रहना। मूलकथा में सीता वाल्मीकि के आश्रम में बच्चों को जन्म देती हैं और वहीं रहती हैं। मूलकथा में वाल्मीकि जृम्भक अस्त्र की शिक्षा देते हैं, उत्तररामचरित में अस्त्र जन्मसिद्ध हैं।

अंक ३- इस अंक में 'छायादृश्य' भवभूति की मौलिक कल्पना है। इसमें सीता अदृश्य रहते हुए राम की दयनीय स्थिति देखती हैं और मूर्च्छित राम को हस्तस्पर्श से होश में लाती हैं। वासन्ती, तमसा और मुरला, ये पात्र भवभूति की अपनी कल्पना हैं।

अंक ४- पूरा चतुर्थ अंक कविकल्पित है। वाल्मीकि के आश्रम में जनक आदि का आगमन; कौसल्या-जनक-संवाद; लव-दर्शन; घोड़े को पकड़ने के लिए लव का प्रस्थान।

अंक ५-चन्द्रकेतु और लव का वार्तालाप; जृम्भक अस्त्र का प्रयोग; राम के पौरुष की निन्दा।

अंक ६- चन्द्रकेतु-लव का दिव्य अस्त्रों से युद्ध; राम का आगमन; युद्ध समाप्ति; राम का लव-कुश से स्नेह-प्रदर्शन।

अंक ७- 'गर्भनाटक' भवभूति की मौलिक कल्पना है। इसमें सम्पूर्ण चराचर के सम्मुख सीता को निर्दोष सिद्ध किया गया है। अरुन्धती और जनमत के आदेशानुसार राम का निर्दोष सीता को स्वीकार करना। नाटक की सुखान्त समाप्ति ।

भवभूति के नाटकों में समाज और संस्कृति-भवभूति के उत्तररामचरित में प्रायः रामायणकालीन समाज और संस्कृति का वर्णन है। उस समय का समाज उन्नत अवस्था में था; धर्मप्रिय था; वर्णाश्रम व्यवस्था प्रचलित थी। वेदादि के अध्ययन, अस्त्र शस्त्रादि-शिक्षण तथा कलात्मक प्रवृत्तियों में जनता की अभिरुचि थी। यज्ञ, संस्कार, तप और दार्शनिक विचारों के प्रति उसकी विशेष निष्ठा थी। ब्रह्मचारी ऋषियों के आश्रम में रहकर संयमी जीवन व्यतीत करते थे और शिक्षा प्राप्त करते थे। वेदत्रयी की शिक्षा के पूर्व उनका उपनयन संस्कार होता था। क्षत्रिय बालक आयुर्वेद, धनुर्वेद और गान्धर्ववेद भी पढ़ते थे। गृहस्थ लोग विवाह के बाद अग्निहोत्री होते थे। यज्ञ में पति के साथ पत्नी भी बैठती थी। सम्मानित व्यक्ति स्त्रियों को आदर का स्थान देते थे। कुछ स्त्रियाँ वेद, दर्शनों आदि का भी उच्च अध्ययन करती थीं, यथा आत्रेयी आदि। दम्पती के लिए पुत्र प्राप्ति का विशेष महत्त्व था। अतिथि

सत्कार का प्रचलन था। ब्राह्मण वेद-शास्त्रादि में निपुण थे। राजा लोकोपचारी कार्यों में व्यस्त रहता था। प्रजापालन उसका मुख्य कार्य था। उस समय कला उन्नत अवस्था में थी । चित्रवीथी-दृश्य और वाल्मीकि के आश्रम में गर्भनाटक इस बात के प्रमाण हैं। पुष्पक विमान के वर्णन से ज्ञात होता है कि उस समय विमान निर्माण कला भी ज्ञात थी। भाग्यवाद, कर्मफल, पुनर्जन्म आदि दार्शनिक विषयों में लोगों की आस्था थी।

भवभूति का शास्त्रीय और कलात्मक पाण्डित्य- भवभूति की कृतियों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनका शास्त्रीय और कला-विषयक ज्ञान अगाध था। उन्होंने वेद, उपनिषद्, दर्शन, धर्मशास्त्र, नीति शास्त्र, राजनीति, धनुर्वेद, साहित्य, कामशास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, संगीत, नृत्य, चित्रकला, मनोविज्ञान, भूगोल और इतिहास आदि का गम्भीर अध्ययन किया था। उनकी कृतियों में पाण्डित्यसूचक अनेक स्थल मिलते हैं। इस नाटक में उन्होंने अपने आपको 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' कहा है, जिसका अभिप्राय है कि वे व्याकरण, मीमांसा और न्यायशास्त्र के विद्वान् थे।

भवभूति की नाट्यकला-संस्कृतसाहित्य में कालिदास के बाद भवभूति का ही नाम उत्कृष्ट नाटककार के रूप में लिया जाता है । उनके मालतीमाधव, महावीरचरित और उत्तररामचरित, इन तीन नाटकों में उत्तररामचरित ही सर्वश्रेष्ठ नाटक माना जाता है। इसमें भवभूति अपने आपको 'परिणतप्रज्ञ' कहते हैं। इसमें उनकी योग्यता और विद्वत्ता का चरम उत्कर्ष प्राप्त होता है। यह नाटक उनकी प्रतिभा का सर्वोत्तम निदर्शन है। भवभूतिकृत उत्तररामचरित नाटक की मुख्य विशेषताएँ हैं :- घटना-संयोजन में सौष्ठव, घटनाओं और वर्णनों की सार्थकता, वर्णनों में स्वाभाविकता, चरित्र-चित्रण में वैयक्तिकता, कथोपकथन में स्वाभाविकता, मनोहर शैली, देशकाल का विचार, कवित्व और रस-परिपाक।

उत्तररामचरित में करुणरस- उत्तररामचरित में रस के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। कुछ शृङ्गार रस का भेद करुण-विप्रलम्भ मानते हैं और कुछ करुण रस। कुछ विद्वान् शास्त्रीय दृष्टि से इसमें करुण-विप्रलम्भ नामक शृङ्गार-रस सिद्ध करते हैं, किन्तु ऐसा मानना भवभूति के साथ घोर अन्याय है। भवभूति ने स्पष्ट रूप से इसमें करुण-रस माना है। उनकी मान्यता है कि शृङ्गार आदि भी करुण के ही विकार हैं-

एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्विन्नः पृथक्पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।

आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान् विकारानम्भो यथा सलिलमेव तु तत्समग्रम्।।

भवभूति की शैली- भवभूति संस्कृत साहित्य के उच्चकोटि के नाटककार और कवि हैं। कालिदास के बाद भवभूति ही सर्वश्रेष्ठ नाटककार हैं। उत्तररामचरित में वे कवित्व में कालिदास से भी आगे निकल गए हैं। अतएव कहा जाता है-'उत्तरे रामचरिते भवमूर्तिर्विशिष्यते'। उनकी असाधारण ख्याति के कारण हैं- उनका भाषा पर पूर्ण अधिकार; प्रसाद, माधुर्य और ओज गुणों से युक्त शैली; वर्णनों में असाधारण पटुता; मानवीय भावनाओं का सूक्ष्मतम अध्ययन और विवेचन; गम्भीर से गम्भीर भावों को सरल और सुबोध भाषा में प्रकट करना; भाषा में प्रौढ़ता, उदारता और अर्थ-गाम्भीर्य।

भाषा पर अधिकार- भवभूति का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। उनमें शक्ति है कि वे भाषा को अपनी उँगली पर नचा सकें। वे अपने आपको 'वश्यवाक्' कहते हैं और वाणी को अपनी अनुवर्तनी बताते हैं। उनकी भाषा सरल और क्लिष्ट, सुबोध और दुर्बोध, कोमल और कठोर, समासरहित और समास प्रधान, इन परस्पर विरोधी गुणों से युक्त है।

भावानुकूल भाषा- भवभूति का शब्दकोष अगाध है। वे भाव और प्रसंग के अनुसार सरल से सरल और कठिन से कठिन शब्दावली का अत्यन्त दक्षता के साथ प्रयोग करते हैं। प्रत्येक स्थान पर अत्यन्त उपयुक्त और सार्थक शब्दों का ही प्रयोग हुआ है। भाषा और शब्दकोष पर असाधारण अधिकार के कारण भाषा में असाधारण मनोरमता, प्रौढ़ता, प्राञ्जलता, परिष्कार और गाम्भीर्य मिलते हैं। उनकी कृतियों में पाण्डित्य श्रौर वैदग्ध्य का अपूर्व सम्मिश्रण है। शृङ्गार, करुण और शान्त रसों के प्रयोग में भाषा अत्यन्त सरल और सुबोध है। वीर, बीभत्स, भयानक, रौद्र और अद्भुत रसों के वर्णन में शब्दावली क्लिष्ट है।

रससिद्ध कवि- भवभूति रससिद्ध कवि हैं। उनका विभिन्न रसों समान अधिकार है। उन्होंने शृङ्गार, वीर और करुण, इन तीन रसों को लेकर अपने तीन नाटक लिखे हैं। वे करुण रस के निर्विवाद सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। अन्य रसों के वर्णन में भी वे दक्ष हैं। उन्होंने रौद्र, भयानक, बीभत्स और अद्भुत रसों का भी सफलता के साथ वर्णन किया है।

वर्णन कुशलता- भवभूति प्रकृतिवर्णन, शारीरिक सौन्दर्यवर्णन, आन्तरिक सौन्दर्यवर्णन, मनोभाव-वर्णन, आन्तरिक दशा-वर्णन और मानवीय भावों के वर्णन में असाधारण पटु हैं। उनकी सूक्ष्म दृष्टि स्थूल से स्थूल और सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्त्वों की ओर अव्याहत गति से प्रवेश करती है। भवभूति में भावाभिव्यंजन की अपूर्व शक्ति है। भवभूति के वर्णनों की प्रमुख विशेषता है कि वे स्वानुभूतिजन्य हैं। उनके वर्णन स्वाभाविक हैं। उन्होंने प्रकृति के सुकुमार और कठोर रूपों तथा प्रकृति से तादात्म्य का सुन्दर वर्णन किया है।

संवादों में औचित्य और रोचकता- भवभूति ने संवादों में सर्वत्र औचित्य और रोचकता का ध्यान रखा है। संवादों में उतना ही अंश दिया गया है, जितना नाटकीय प्रवाह में बाधक न हो। संवाद और उनकी भाषा सर्वथा पात्रों के अनुकूल है। प्रत्येक पात्र अपनी आयु, योग्यता आदि के अनुकूल ही भाव और भाषा का प्रयोग करता है।

पात्रों का चरित्र चित्रण- भवभूति ने पात्रों का चरित्र चित्रण अत्यन्त उत्कृष्ट ढंग से किया है। वे आदर्शवादी हैं, अतः उनके सभी पात्र आदर्श पालक हैं। वे किसी एक उच्च आदर्श के प्रतीक हैं। राम आदर्श राजा हैं तो सीता आदर्श सती स्त्री; जनक स्नेही पिता हैं तो कौसल्या स्नेहमयी माता; वाल्मीकि आदर्श ऋषि हैं तो अरुन्धती आदर्श तपस्विनी; लक्ष्मण आदर्श भाई हैं तो वासन्ती आदर्श सखी। प्रत्येक पात्र आदर्श के लिए जीते और मरते हैं। प्रत्येक पात्र अपने अनुकूल ही भाषा का प्रयोग करता है। भवभूति ने चरित्र-चित्रण में आदर्शवाद, मनोवैज्ञानिकता एवं मर्यादा का पूर्णरूप से ध्यान रखा है।

अलंकारों का प्रयोग- भवभूति के नाटकों में प्रायः सभी प्रमुख अलंकारों के प्रयोग मिलते हैं। भाव और भाषा पर असाधारण अधिकार होने के कारण अलंकार अनायाससिद्ध हैं। भवभूति ने उपमा की नवीन विधाओं को जन्म दिया है। उनके अनेक अर्थान्तरन्यास सुभाषित के रूप में प्रचलित हो गए हैं।

भवभूति की अन्य विशेषताएँ- (क) मानवीकरण- भवभूति ने पृथ्वी, गङ्गा, गोदावरी, वनदेवता (वासन्ती) आदि प्राकृतिक तत्त्वों को मानव के रूप में प्रस्तुत किया है। (ख) संवादात्मक श्लोक- श्लोक के एक अंश को एक पात्र और दूसरे अंश को दूसरा पात्र बोलता है। इस प्रकार संवादात्मक

श्लोक भी दिए गए हैं।(ग) व्यंग्य प्रयोग- भवभूति ने कुछ सुन्दर व्यंग्य-प्रयोग भी किए हैं। (घ) अप्रचलित शब्दों का प्रयोग-जैसे आरकूट (पीतल), कन्दल (अंकुर), प्रतिसूर्यक (गिरगिट), अम्बूकृत (थूथू करना), मौकुलि (कौआ), प्रचलाकिन् (मोर), रोहिण (चन्दन), कुम्भीनस (सर्प)।

उत्तररामचरित की तीन महत्त्वपूर्ण कल्पनाएँ- उत्तररामचरित की तीन महत्त्वपूर्ण कल्पनाएँ है- चित्रदर्शन, छायांक तथा गर्भनाटक। तीनों के पृथक्-पृथक् नाटकीय महत्त्व कथावस्तु के सघन प्रभाव की दृष्टि से हैं। चित्रदर्शन का स्थूल उद्देश्य सीता का मनोरञ्जन करना है जो अपने पिता के लौटने से दुःखी है। इसमें करुण दृश्यों का संकलन है, इसीसे भावी सीतावियोग का संकेत मिलता है। इसी में जृम्भकास्त्र के दृश्य हैं तथा सीता की सन्तान में भी स्वयं इस अस्त्र के संक्रमण की बात कही गयी है (सर्वथेदानीं त्वत्प्रसूतिमुपस्थास्यन्ति); लवकुश को पहचानने में (अङ्क-७) यही जृम्भकास्त्र सहायक होता है। सीता के प्रति राम के अनुपम स्नेह की सूचना भी चित्रदर्शन से प्राप्त होती है, यह स्नेह आगे जाकर राम के वचनों में स्पष्टतर होकर सीता-निर्वासन की मार्मिकता को व्यक्त करता है। इस प्रसंग के द्वारा राम और सीता के अतीत का अनावरण होता है तथा तृतीय अंक में निरूपित दृश्यों की पृष्ठभूमि प्रस्तुत होती है।

इस नाटक का छायांक भी भवभूति की मानसी सृष्टि है। इससे सीता के निर्वासन के बाद की घटनाओं का संक्षिप्त परिचय तो मिलता ही है, राम तथा सीता की मनःस्थिति का भी स्पष्ट निरूपण होता है। राम की मनःस्थिति सूत्ररूप में इस प्रकार दी गयी है-

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।।

आगे चलकर राम के प्रलाप, मूर्छा आदि में यह स्फुटतर होती है जिससे सीता को आश्वासन मिलता है कि राम उन्हें कितना आदर देते हैं। दूसरी ओर तमसा के वचन में सीता के हृदय की विविध अवस्थाओं का निर्देश है। सीता के हृदय में एक ही समय तटस्थता, कोप, स्तम्भीभाव, जडता, प्रसन्नता, करुणभाव तथा प्रेम के द्रवीभाव- ये सारे भाव उत्पन्न होकर अनिर्वचनीय स्थिति उत्पन्न करते हैं, क्रमशः ये सभी स्नेह के रूप में विलीन हो जाते हैं। सीता का क्षोभ मिट जाने से पुनः समागम की

प्रबल पीठिका भी प्रस्तुत हो जाती है। दृश्यों में वैविध्य, राम के कथनों में मार्मिकता, मनोभावों की सूक्ष्म व्यञ्जना, दाम्पत्य और अपत्य का दर्शन, छायानाटक की सृष्टि तथा करुण-रस के निरन्तर प्रवाह से तृतीय अंक एक रोचक, अनिवार्य तथा अद्भुत नाट्य-भाग है।

गर्भनाटक की योजना से सीता का पवित्र चरित्र सार्वजनिक रूप से घोषित हो जाता है और बिखरे हुए परिवार को संयुक्त करने में सहायता होती है। पृथ्वी और गंगा के निरन्तर सान्निध्य में रह चुकी सीता की कोई कलंकित करने का साहस नहीं कर सकता। एक प्रकार से गर्भनाटक उत्तररामचरित का प्रतीक बनकर आया है जिसे वाल्मीकि के नूतन रूप, परिणतप्रज्ञ, शब्दब्रह्मविद् भवभूति ने रचा है।

उत्तररामचरित के वर्णनों में सर्वत्र स्वाभाविकता है; युद्ध, भीषण प्रकृति, अरण्य, शिष्टाचार के संवाद, मनोभावों की अभिव्यक्ति तथा तपोवन के चित्रण में सर्वत्र सोद्देश्यता है। एक भी पद्य अनावश्यक नहीं लगता। गद्य के संवाद कुछ दीर्घकाय हो गये हैं किन्तु पात्रों की स्थिति पर विचार करने पर उनमें भी असंगति नहीं लगेगी। भवभूति की भाषा मर्यादायुक्त और अभिव्यक्तिक्षम है। अवसर के अनुसार उसमें क्लिष्टता या सरलता निहित है, जैसे- प्रकृति-वर्णन में लम्बे वाक्य दीर्घकाय समासों से वेष्टित होते हैं तो मर्मस्पर्शी संवाद सरलतम भाषा में प्रकट होते हैं। युद्ध वर्णन स्वभावतः रसानुकूल भाषा का सन्धान करता है। इस नाटक में भवभूति ने अन्य नाटकों की अपेक्षा अभिव्यक्ति का एक अनुकरणीय आदर्श स्थापित किया है।

पात्रों की दृष्टि से भी यह उत्कृष्ट नाटक है। राम का करुण और प्रजापालक रूप, एकपत्नीव्रत (यज्ञ में हिरण्मयी सीता-प्रतिमा बनाने वाले), विनय, क्षमा, उदारता- ये गुण हृदयावर्जक हैं। सीता के परित्याग में वे निष्कलुष हैं, क्योंकि एक ओर लोकाराधन और दूसरी ओर मन्त्रणा का अभाव उनके जीवन को विवश किये हुए है। सीता की विनम्रता और राम के प्रति अनुपम अनुराग को तृतीय अंक में कवि ने पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया है। राम की करुणदशा पर मूर्च्छित हो जाती हैं। इस प्रकार नायक और नायिका की मौन तपस्या दिखाने में कवि की कोई तुलना नहीं है। अन्य पात्रों में चन्द्रकेतु, लव,

कुश और वाल्मीकि महत्त्वपूर्ण हैं; वे पृथक्-पृथक् गुणों की मूर्ति हैं। सभी पात्र गम्भीर हैं, इसीलिए विदूषक जैसे पात्र को भवभूति ने स्थान नहीं दिया है।

भवभूतिका व्यक्तित्व– ग्रन्थकार की रचनाओं में उसका व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित रहता है। ग्रन्थकार के व्यक्तिगत जीवन की, उसके आचरण की, तथा उसके विचारों की छाप उसकी रचनाओं पर पड़े बिना नहीं रहती। भवभूति इस सामान्य नियम के अपवाद नहीं हैं। उत्तररामचरित नाटकके अध्ययनसे भवभूति के जीवन की कुछ विशेषता स्पष्टतः सामने आती है। भवभूति के दाम्पत्य प्रेम का आदर्श बहुत ही पवित्र तथा उच्च है। उत्तररामचरित के प्रथम तीन अङ्कों में दाम्पत्यप्रेम का यह उज्ज्वल आदर्श पाठक के ध्यान को आकर्षित किये बिना नहीं रहता। उनका दाम्पत्यप्रेम वासनाशून्य है, वह विषयीलोक की वस्तु नहीं है, वह सदा एकरस बना रहता है, वृद्धावस्था में घटता नहीं प्रत्युत और भी बढ़ता है, उसमें हृदय सदा ही विश्रान्ति प्राप्त करता है, धन्य है वह व्यक्ति जिसे ऐसा दाम्पत्यप्रेम प्राप्त है। भवभूतिकी दृष्टिमें स्त्री भोग्यवस्तु नहीं, वह गृहलक्ष्मी है, तथा अपनी उपस्थितिमात्र से गृह में सुख तथा शान्तिका प्रसार करती है। भवभूतिका वात्सल्यप्रेम भी एक ऊँचे आदर्शपर प्रतिष्ठित है। संतान दम्पत्ति के हृदयों की एक आनन्दमय ग्रन्थि है, जो उनके हृदयों को सदा एक-दूसरे से बाँधे रहती है। भवभूति स्वयं एक आदर्शपति तथा आदर्श पिता रहे होंगे। प्रकृति के वर्णन में भी वे प्रकृति को गंभीरता तथा गुरुता की ओर ही अधिक आकृष्ट हुए हैं, प्रकृति के हृदयहारी सौन्दर्यका वर्णन तो उन्होंने कम ही किया है। जनस्थान का वर्णन तो और भी लोमहर्षक है। मानवकी अन्तःप्रकृतिके वर्णनमें भी भवभूतिने हृदयके शोक तथा क्षोभका जितना विशद वर्णन किया है, उतना आमोद-प्रमोद का नहीं। अपनी इस गम्भीर प्रकृति के कारण ही अपनी सर्वोत्कृष्ट रचना को उन्होंने करुणरसप्रधान बनाया और करुणरस को ही एकमात्र रस तथा शेष रसों को उसका विवर्त माना है। उनके इस नाटक में विदूषकका एकदम अभाव भी उनके गम्भीर स्वभावका ही परिचायक है। संपूर्ण उत्तररामचरितमें केवल दो-तीन स्थानोंपर ही हास्यरसकी कुछ पुट है। गम्भीरताके साथ-साथ ही भवभूति में अपनी कवित्वशक्ति के लिये अभिमान का भाव भी है, जिसका उन्होंने उत्तररामचरित में प्रदर्शन किया है। वाग्देवी उनके वशीभूत है तथा सदा ही उनकी इच्छाका अनुवर्तन करती हैं, ऐसा वे आरम्भ में कह देते

हैं, और अन्त में भरतवाक्य में अपनी रचना को वाल्मीकि रामायण के समान उत्कृष्ट तथा अपने आपको भी वाल्मीकिके समान ही शब्दब्रह्मविद् तथा प्राज्ञ मानते हैं।